Ram Stuti from Shri Ramcharitmanas

राम स्तुति

Document Information

Text title : Ram Stuti from Shri Ramcharitmanas

File name : stuti.itx

Category : raama, tulasIdAsa

Location : doc_z_otherlang_hindi

Author : Goswami Tulasidas

Transliterated by : Mr. Balram J. Rathore, Ratlam, M.P., a retired railway driver

Description-comments : Awadhi, Extracted from Manas

Acknowledge-Permission: Dr. Vineet Chaitanya, vc@iiit.net

Latest update : March 12, 2015

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

June 23, 2022

sanskritdocuments.org

राम स्तुति

गोस्वामी तुलसीदास विरचित श्रीरामचरितमानस

बालकाण्ड

राम जन्म

भये प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी ।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप बिचारी ॥

लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुज चारी ।
भूषन वनमाला नयन बिसाला सोभासिन्धु खरारी ॥

कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि बिधि करौं अनंता ।
माया गुअन ग्यानातीत अमाना वेद पुरान भनंता ॥

करुना सुख सागर सब गुन आगर जेहि गावहिं श्रुति संता ।
सो मम हित लागी जन अनुरागी भयउ प्रकट श्रीकंता ॥

ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति बेद कहै ।
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै ॥

उपजा जब ग्याना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै ।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै ॥

माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा ।
कीजे सिसुलीला अति प्रियसीला यह सुख परम अनूपा ॥

सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा ।
यह चरित जे गावहि हरिपद पावहि ते न परहिं भवकूपा ॥

बिप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार ।
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गो पार ॥

अरण्यकाण्ड

अत्रि मुनि द्वारा स्तुति

नमामि भक्त वत्सलम् । कृपालु शील कोमलम् ॥

भजामि ते पदांबुजम् । अकामिनाम् स्वधामदम् ॥

निकाम् श्याम् सुंदरम् । भवाम्बुनाथ मंदरम् ॥

प्रफुल्ल कंज लोचनम् । मदादि दोष मोचनम् ॥

प्रलंब बाहु विक्रमम् । प्रभोऽप्रमेय वैभवम् ॥

निषंग चाप सायकम् । धरम् त्रिलोक नायकम् ॥

दिनेश वंश मंदनम् । महेश चाप खंदनम् ॥

मुनींद्र संत रंजनम् । सुरारि वृन्द भंजनम् ॥

मनोज वैरि वंदितम् । अजादि देव सेवितम् ॥

विशुद्ध बोध विग्रहम् । समस्त दूषणापहम् ॥

नमामि इंदिरा पतिम् । सुखाकरम् सताम् गतिम् ॥

भजे सशक्ति सानुजम् । शची पति प्रियानुजम् ॥

त्वदंघ्रि मूल ये नराह । भजंति हीन मत्सराह ॥

पतंति नो भवार्णवे । वितर्क वीचि संकुले ॥

विविक्त वासिनह सदा । भजंति मुक्तये मुदा ॥

निरस्य इंद्रियादिकम् । प्रयांति ते गतिम् स्वकम् ॥

तमेकमद्भुतम् प्रभुम् । निरीहमीश्वरम् विभुम् ॥

जगद्गुरुम् च शाश्वतम् । तुरीयमेव केवलम् ॥

भजामि भाव वल्लभम् । कुयोगिनाम् सुदुर्लभम् ॥

स्वभक्त कल्प पादपम् । समम् सुसेव्यमन्वहम् ॥

अनूप रूप भूपतिम् । नतोऽहमुर्विजा पतिम् ॥

प्रसीद मे नमामि ते । पदाब्ज भक्ति देहि मे ॥

पठंति ये स्तवम् इदम् । नरादरेण ते पदम् ॥

व्रजंति नात्र संशयम् । त्वदीय भक्ति संयुताह ॥

अरण्यकाण्ड

मुनि सुतीक्ष्ण द्वारा स्तुति

कह मुनि प्रभु सुन बिनती मोरी । अस्तुति करौं कवन बिधि तोरी ॥

महिमा अमित मोरि मति थोरी । रबि सन्मुख खद्योत अँजोरी ॥

श्याम तामरस दाम शरीरम् । जटा मुकुट परिधन मुनिचीरम् ॥

पाणि चाप शर कति तुणीरम् । नौमि निरंतर श्री रघुवीरम् ॥

मोह विपिन घन दहन कृशानुह । संत सरोरुह कानन भानुह ॥

निशिचर करि बरूथ मृगराजह ॥ त्रातु सदा नो भव खग बाजह ॥

अरुण नयन रजीव सुवेशम् । सिता नयन चकोर निशेशम् ।
हर ह्रदि मानस बाल मरालम् । नौमि राम उर बाहु विशालम् ॥

संसय सर्प ग्रसन उरगादह । शमन सुकर्कश तर्क विषदह ॥

भव भंजन रंजन सुर यूथह । त्रातु नाथ नो क्ऱ्६इपा वरूथह ॥

निर्गुण सगुण विषम सम रूपम् । ग़्यान गिरा गोतीतमनूपम् ॥

अमलम अखिलम अनवद्यम अपारम् । नौमि राम भंजन महि भारम् ॥

भक्त कल्प पादप आरामह । तर्जन क्रोध लोभ मद कामह ॥

अति नागर भव सागर सेतुह । त्रातु सदा दिनकर कुल केतुह ॥

अतुलित भुज प्रताप बल धामह । कलि मल विपुल विभंजन नामह ॥

धर्म वर्म नर्मद गुण ग्रामह । संतत शम तनोतु मम रामह ॥

जदपि बिरज ब्यापक अबिनासी । सब के ह्रदयं निर्ंतर बासी ॥

तदपि अनुज श्री सहित खरारी । बसतु मनसि सम काननचारी ॥

जे जानहिं ते जानहुं स्वामी । सगुन अगुन उर अंतरजामी ॥

जो कोसलपति राजिव नयना । करौ सो राम ह्रदय मम अयना ॥

अस अभिमान जाइ जनि भोरे । मैं सेवक रघुपति पति मोरे।

उत्तरकाण्ड

श्रीराम के राज्याभिषेक के पश्चात् स्तुति

जय राम रमारमणम् शमनम् । भव ताप भयाकुल पाहि जनम् ॥
अवधेश सुरेश रमेश विभो । शरणागत माँगत पाहि प्रभो ॥
दससीश विनाशन बीस भुजा । कृत दूरि महा महि भूरि रुजा ॥
रजनीचर बृंद पतंग रहे । सर पावक तेज प्रचंड दहे ॥
महि मंडल मंडन चारुतरम् । धृत सायक चाप निषंग बरम् ॥
मद मोह महा ममता रजनी । तम पुंज दिवाकर तेज अनी ॥
मनजात किरात निपात किये । मृग लोग कुभोग सरेन हिये ॥
हति नाथ अनाथनि पाहि हरे । विषया बन पाँवर भूलि परे ॥
बहु रोग बियोगिन्हि लोग हये । भवदंघ्रि निरादर के फल ए ॥
भव सिंधु अगाध परे नर ते । पद पंकज प्रेम न जे करते ॥
अति दीन मलीन दुखी नितहीं । जिन्ह कें पद पंकज प्रीत नहीं ॥
अवलंब भवंत कथा जिन्ह कें । प्रिय संत अनंत सदा तिन्ह कें ॥
नहिं राग न लोभ न मान मदा । तिन्ह कें सम बैभव वा बिपदा ॥
एहि ते तव सेवक होत मुदा । मुनि त्यागत जोग भरोस सदा ॥
करि प्रेम निरंतर नेम लियें । पद पंकज सेवत शुद्ध हियें ॥
सम मानि निरादर आदरही । सब संत सुखी बिचरंति मही ॥
मुनि मानस पंकज भृंग भजे । रघुवीर महा रनधीर अजे ॥
तव नाम जपामि नमामि हरी । भव रोग महागद मान अरी ॥
गुन सील कृपा परमायतनम् । प्रनमामि निरंतर श्रीरमनम् ॥
रघुनंद निकंदय द्वंद्व घनम् । महिपाल बिलोकय दीन जनम् ॥

बार बार बर मागउं हरषि देहु श्रीरंग ।
पद सरोज अनपायनी भगति सदा सतसंग ॥

Ram Stuti from Shri Ramcharitmanas

pdf was typeset on June 23, 2022

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*